"वक्खर"

• जिस वखर कउ लैनि तू आइआ । राम नाम संतन घरि पाइआ।

अर्थ:- हे भाई ! जो सौदा खरीदने के लिए तू जगत में आया है वह राम नाम रूपी सौदा संतों के घर में मिलता है ।

तजि अभिमान लेहु मन मोलि । राम नाम हिरदे महि तोलि ।

अर्थ:- इसलिए अहंकार छोड़ दे, और मन के बदले ये सौदा खरीद ले, और प्रभु का नाम हृदय में परख ।

लादि खेप संतह संगि चाल । अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ।

अर्थः- संतों के साथ चल और राम नाम का ये सौदा लाद ले, माया के अन्य धंधे छोड़ दे ।

धनि धनि कहे सभ कोई । मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ।

अर्थः- अगर ये उद्यम करेगा तो हरेक जीव तुझे शाबाश देगा, और प्रभु की दरगाह में भी तेरा मुँह उज्जवल होगा ।

इह वापार विरला वापारै । नानक ता के सद बलिहारै ।

(5-283)

अर्थः- हे नानक ! परमात्मा सब जगह मौजूद है, किसी भी जगह उसका अस्तित्व ना हो ऐसा नहीं है । सब जीवों के अंदर व चारों तरफ प्रभु अंग - संग है उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं हो सकता ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"